

पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

(दैनिक महुल पत्रिका)

चितीइगड़। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जनकल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएँ लागू कर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में चितीइगड़ जिले के गंगारार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी बातों को संजोने के लिए अनुष्ठान कर दिखाया है जिसकी वक्तो प्रशंसा हो रही है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक " प्रभाश जोशी गांधी म्यूजियम " की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान उत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), हरिजन (अंक- 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे- LE MIROIR DU MONDE (पेरिस), Le Petit Journal, La Domenica del



Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, आगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चुका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम एक क्रम में लाने कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुतले अनदेखे फोटो और सक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गांधी पर प्रकाशित कई छक टिकटों का भी

अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है। वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (जीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही सत्यमेव जयते की छेटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी की चरखा चलते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रैप्लिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुतले सिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा कलेक्शन है।

अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक सत्य रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाएं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के

विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी साइबेरी भी बनाई गई है, जहाँ गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएँ यहाँ के शांत वातावरण में बैठकर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एनुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्वर्गीय भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मंत्री ऑडि बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (जीन), डॉ. हरिश गुरानी, डॉ. राजीव, सिरीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।



मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना



चित्तौड़गढ़, मेवाड़ विश्वविद्यालय में स्थापित बापू की प्रतिमा।

पत्रिका

जैसे लगता है 'बापू' ही विचार रहे हों इस आश्रम में

पत्रिका म्यूज नेटवर्क
patrika.com

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ जिले के गंगार मिश्र मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अमूला कार्य कर दिखाया है। यूनिवर्सिटी में केन्द्र आकर्षक 'इन्धम जैसे गांधी म्यूजियम' की स्थापना की गई है। म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान सन्तान्तरण सञ्चालन करने में प्रकटित महात्मा गांधी से संबंधित घटनाओं के स्मरणार्थ की मूल कलाओं को साजसज्जा तरीके से सजाया गया है। साथ ही महात्मा गांधी की ओर से निरूपित एवं विभिन्न सन्तान्तरण पर्यो जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930), हरिजन (अंक 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है। इससे गांधी जी के लेख

देखे जा सकते हैं।

विदेशी पत्र पत्रिकाओं में गांधी

म्यूजियम में कई विदेशी मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी हैं। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं की तस्वीरों के माध्यम से एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और शक्तिशाली जानबूरी हैं। यहां गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनेकानेक संग्रहण है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संग्रहण भी यहां देखने को मिलता है। एक कक्ष में यह म्यूजियम गांधी के हमारे ही आसपास होने का अहसास कराता है।



चित्तौड़गढ़, मेवाड़ विश्वविद्यालय में लगाई गई तस्वीरें।

पत्रिका

साबरमती आश्रम की झांकी भी

गांधी म्यूजियम बरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्तेन्द्र सिंह (होन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी की साजसज्जा लगी हुई दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण धीम और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी की ओर से उपस्थित में ली गई साबरमती

की प्रतिमूर्ति (रेलिक) दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर खाते पुराने लिफाफे एवं नेट्स का भी यहां अनेकानेक संग्रहण है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों की भी संजो कर रखा गया है।

वह दुखदायी खबर भी है संरक्षित

यहां स्मरणार्थ यह 'द स्टेट्समैन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रती भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक सत्य यह जानें हैं, जब उनकी निम्न कई और निम्न एक दीवार पर लगी है। यहां अनेक प्रवेश सत्य एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव की सुंदर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। यहां आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। म्यूजियम में गांधी लक्ष्मणी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी दुस्तर हैं। गांधी पर निरूपण करने वाले छात्र-छात्राएं यहां के साथ साजसज्जा में बैठक कर अध्ययन कर करना प्रमत्त करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविंद लाल गहिया ने बताया कि उनके पिता भंवरलाल गहिया गांधीवादी विचारों के समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने कई युनिवर्सिटी पामिसर डॉ. अशोक कुमार गहिया, मेजर और कोर्ट राजकुमार गहिया एवं युनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है।

सही होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भावों का संग्रह की हुई कई पुराने लिफाफे भी यहां संग्रहित कर रखी गई है। म्यूजियम इन्फोर्टर बरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्तेन्द्र सिंह बताते हैं कि क्षेत्र के सिटीजन अहमद

मंजूरी का इस संग्रहण में अहम योगदान रहा है। मंजूरी ने बरफन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महात्मापूर्ण वाक्यों का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में अहम अंश है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

गांधी की यादों को संजोने के लिए किया अनूठा कार्य पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

एजेन्सी @ जय काँठल न्यूज चित्तौड़गढ़ 10 सितम्बर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जनकल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएं लागू कर प्रभावी ियान्वन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में चित्तौड़गढ़ जिले के गंगार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है जिसकी काफी प्रशंसा हो रही है। यूनिवर्सिटी में वेहद आकर्षक "प्रभाष जोशी गांधी म्यूजियम" की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), हरिजन (अंक- 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी

मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे- LE MIROIR DU MONDE (पेरिस), Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फॉस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चुका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं की तस्वीरों के माध्यम एक 'म' में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गांधी पर प्रकाशित कई ड्यक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है।

वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा

गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रैलिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों की भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समैन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई है।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती हैं कि क्षेत्र के श्री सिरीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव म्यूजियम में प्रवेश करते ही



दर्शक एकाएक स्तब्ध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह जाएं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्गी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहाँ गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएँ यहाँ

के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष श्री गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्वर्गीय श्री भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेबर ऑफ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन), डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्षि, सिरीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

जैसे लगता है 'बापू' ही विचार रहे हों इस आश्रम में



देखे जा सकते हैं।
विदेशी पत्र पत्रिकाओं
में गांधी

पत्रिका म्यूजियम
patna.com

विशेषांगण। विश्वेश्वर जिले के रंगर रिस मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी घटो को संजोने के लिए अमृत कर वर दिखाने है। यूनिवर्सिटी के केर अवरक 'प्रभा जेही गांधी म्यूजियम' को स्थापना की गई है। म्यूजियम में कलकल अन्दोलन के दौरान लकलकल संसाधन पत्रों में प्रकलित महात्मा गांधी से संबंधित घटनाओं के समकाली की मूल कलानी को खानदा लकल से सजाना गया है। साथ ही महात्मा गांधी की ओर से निकाले गए विभिन्न समकाल पत्रों जैसे मजलकन (अंक 19 जून 1930), हरिजन (अंक 13 फरवरी 1949) और की भी प्रदर्शित किया गया है। इतने गांधी जी के लेख

म्यूजियम में कई विदेशी मजलीन एवं पत्र-पत्रिकाओं के कल पत्र हैं जिन पर महात्मा गांधी की समीर छपी हैं। ये मजलीन एवं पत्र-पत्रिकाएं अंग्रेजी, हिंदी, स्पेनिश, इटालियन और भाषाओं में हैं। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को समीरों के माध्यम से एक जग में लाना कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अन्दरे को छोटी और समीर खानकारी है। यहां गांधी पर प्रकलित कई हल टिकटी का भी अन्दरे खलकल है। कनीष से देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहां देखने को मिलता है। एक नजर में यह म्यूजियम गांधी के हमारे ही अलकल होने का अलकल कराना है।



विश्वेश्वर मेवाड़ विश्वविद्यालय में लगाई गई फोटो-गैलरी।

सावरमती आश्रम की झांकी भी

गांधी म्यूजियम लरि प्रोफेसर डॉ. निरलेख सिंह (डोन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करने ही सावरमती आश्रम की छोटी सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को खलकल हल दिखाना गया है। इस मूर्ति को समकाल लोच और उनकी टीम ने बनवा है। मूर्ति के पास गांधी की ओर से उपलब्ध थे ली व्द समकाली

को प्रतिकृति (रॉलक) दिखाई गई है। गांधी की लकल कल पुराने मिकल एवं मेकल का भी यहां अलकल कलकल है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकलित दर्जनों फोटो कई एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है।

यह दुखदायी खबर भी है संरक्षित

यहां लकल पत्र 'द स्टेट्समैन' को दिनांक 31 जनवरी 1948 की छति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक लकल रह जाते हैं, जब उनकी निरल का और मिकल एक लकल पर जाते हैं। यहां ओम प्रकल लकली एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उग्र में रहे हाव-भाव को लकल लिफाफों के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाना गया है। यहां आने कल लोच इन चित्रों के साथ लकली लेना नहीं भूलें। म्यूजियम में गांधी लकली भी कल गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई लकली पुलकल हैं। गांधी पर निरल करने कल लकल-लकल यहां के लोच कलकल में बैठक का अलकल बन कलना पलंद कराने हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एलुकलन समकाली अलकल केविंद लल लदिया ने कलना कि उनके पिता संकलल लदिया गांधीलदी विचारों के समकल से। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई युनिवर्सिटी लकलर डॉ. अलकल लुकर लदिया, मेकर ओक कोई राधाकल लदिया एवं युनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पुरा किया है।

लदीर होने के खबर लकी हुई है। गांधी के लकली का लकल की हुई कई पुरानी लिफाफे भी यहां संकल कर रखी गई हैं। म्यूजियम लकलीकर लरिह प्रोफेसर डॉ. निरलेख सिंह बताते हैं कि क्षेत्र के सिदीक अलकल

संमूर्ति का इस संकलन में अलकल खेकलन रहा है। संमूर्ति में कलकल से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई लकलकल कलुओं का लकल किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम लया है।

विश्वेश्वर, मेवाड़ विश्वविद्यालय में स्थापित बापू की प्रतिमा।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

>> पिता को गांधी से लगाव था, तो मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

चित्तौड़गढ़, 10 सितम्बर (नसं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जन कल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएं लागू कर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में जिले के गंगारार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए बेहद आकर्षक 'प्रभाष जोशी गांधी म्यूजियम' की स्थापना की है।

गांधी म्यूजियम में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930, हरिजन अंक-13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे LE MIROIR DU MONDE (पेरिस) Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक्स सर्वे आदि के कवर पेज हैं, जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चुका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम



150 चित्रों के माध्यम से गांधीजी के हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक सन्मग्न रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाएँ ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधीजी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहाँ गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएँ यहाँ के शांत वातावरण में बैठकर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और सक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है।

वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन)

के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रैप्लिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ

पिता के सपने को किया साकार

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्व. भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेबर ऑफ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्षि, सिद्दीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समैन' की 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई है।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती हैं कि क्षेत्र के सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।